

श्रीः  
श्रीमते रामानुजाय नमः  
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः  
श्रीगुरुपरनपुराधीशाय श्रीकृष्णाय परब्रह्मणे नमः

श्री मेल्लत्तुर् नारायणभट्टतिरेः कृतिषु  
॥ श्रीमन्नारायणीये चतुर्थं दशकम् ॥

*This document has been prepared by*

*Sunder Kidāmbi*

*with the blessings of*

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

*His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam*

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

## ॥ শ্রীমন্নারাযণীযে চতুর্থং দশকম্ ॥

অষ্টাঙ্গযোগর্গনং যোগসিদ্ধির্গনং চ

কল্যতাং মম কুরুশ্চ তরতীং

কল্যতে ভরদুপাসনং যযা।

স্পষ্টমষ্টরিধযোগচর্যযা

পুষ্টযাশু তর তুষ্টিমাশ্নুযাম্ ॥ 4.1 ॥

ব্রহ্মচর্যদৃঢ়তাডিভির্মৈ -

রাপ্নরাদিনিযমৈশ্চ পারিতাঃ।

কুর্মহে দৃঢ়মমী সুখাসনং

পঙ্কজাদ্যমপি রা ভরৎপরাঃ ॥ 4.2 ॥

তারমন্তরনুচিন্ত্য সন্ততং

প্রাণরায়ুমভিযম্য নির্মলাঃ।

ইন্দ্রিয়াণি বিষযাদথাপহ -

ত্যাশ্মহে ভরদুপাসনোশ্নুখাঃ ॥ 4.3 ॥

অশ্বফুটে রপুষি তে প্রযত্নতো

ধারযেম ধিষণাং মুহর্মুহঃ।

তেন ভক্তিরসমন্তরার্দ্রতা -

মুদ্রহেম ভরদভিঘ্নচিন্তকাঃ ॥ 4.4 ॥

বিস্মৃটারযরভেদসুন্দরং

৳রদ্বপুশ্চিচিরশীলনারশাৎ।

अश्रमं मनसि चिन्तयामहे  
ध्यानयोगनिरतास्त्रुदाश्रयाः ॥ 4.5 ॥

ध्यायतां सकलमूर्तिमीदृशी -  
मुन्मिषन्मधुरताहतात्मनाम्।  
सान्द्रमोदरसरूपमात्रुरं  
ब्रह्मरूपमयि तेहरभासते ॥ 4.6 ॥

तत्समास्त्रदनरूपिणीं स्थितिं  
त्रसमाधिमयि रिश्रनायक।  
आश्रिताः पुनरतः परिच्युता -  
रारभेमहि च धारणादिकम् ॥ 4.7 ॥

इत्थमभ्यसननिर्भरोल्लस -  
त्रुपरात्सुखकल्लितोत्सराः।  
मुञ्जुञ्जुकुलमौलितां गताः  
सङ्करेम शुकनारदादिरं ॥ 4.8 ॥

त्रसमाधिरिजये तु यः पुन -  
र्मङ्गु मोम्करसिकः क्रमेण रा।  
योगरश्यामनिलं षडाश्रये -  
रुन्नयत्यज सुषुम्नया शनैः ॥ 4.9 ॥

लिङ्गदेहमपि संत्यजन्नथो  
लीयते त्रयि परे निराग्रहः।  
उर्ध्वलोककुतुकी तु मूर्धतः  
सार्धमेव करणैर्निरीयते ॥ 4.10 ॥

अग्निरासररलर्कपक्कगै -  
रुत्तरायणजूषा च दैरतेः।

प्रापितो ररिपदं भरंपरो  
मोदरान् फुरपदान्तमीयते ॥ 4.11 ॥

आस्थितोहथ महरालये यदा  
शेषरक्तुदहनोष्णगार्द्यते।  
स्यते भरदुपाश्रयस्तदा  
रेधसः पदमतः पुरैर रा ॥ 4.12 ॥

तत्र रा त्र पदेहथरा रसन्  
प्राकृतप्रलय एति मुक्तताम्।  
स्नेच्छया खलु पुरा रिमुच्यते  
संरिडिद्य जगदगुमोजसा ॥ 4.13 ॥

तस्य च स्थितिपयोमहोहनिल -  
दोमहंप्रकृतिसप्तकारुतीः।  
ततदात्कतया रिशन् सुथी  
याति ते पदमनारुतं रिभो ॥ 4.14 ॥

अर्चिरादिगतिमीदृशीं ब्रजन्  
रिच्यतिं न भजते जगंपते।  
सच्चिदात्क भरदगुणोदया -  
नुत्तरन्तमनिलेश पाहि माम् ॥ 4.15 ॥

॥ इति श्रीमन्नारायणीये चतुर्थं दशकं समाप्तम् ॥